Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

डीम्ड विश्वविद्यालयों और सरकारी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में उपलब्ध ई-संसाधनों के बारे में जागरूकता का अध्ययन

Reetu Tiwari[1]*, Dr. Pradeep Kumar Dubey[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - ई-संसाधन विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और अपने उपयोगकर्ताओं को बेहतर सहायता प्रदान करते हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय के शिक्षकों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर ई-संसाधनों के उपयोग के प्रभाव की पहचान करना है। चूंकि यह अध्ययन उत्तरदाताओं का संस्थान वितरण और ई-संसाधन कौशल का उपयोग करना था, उत्तरदाताओं की संस्था और इंटरनेट के वितरण का सामान्य रूप से कॉलेज के शैक्षणिक अनुभव पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

खोजशब्द - ई-संसाधन, विश्वविद्यालय

----------X----------

परिचय

ई-संसाधन एक इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधन है जो वेब, ऑन या ऑफ-कैंपस पर एक्सेस कर सकता है। एक कम्प्यूटरीकृत डिवाइस द्वारा हेरफेर के लिए एन्कोडेड सामग्री (डेटा और/या प्रोग्राम। इस सामग्री को कम्प्यूटरीकृत डिवाइस (जैसे सीडीरॉम ड्राइव) या कंप्यूटर नेटवर्क (जैसे इंटरनेट) से सीधे जुड़े परिधीय के उपयोग की आवश्यकता हो सकती है।

ई-संसाधन को एक ऐसे संसाधन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके लिए कंप्यूटर एक्सेस या किसी भी इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद की आवश्यकता होती है जो डेटा का संग्रह प्रदान करता है, चाहे वह टेक्स्ट हो जो पूर्ण टेक्स्टबेस, इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, छवि संग्रह, अन्य मल्टीमीडिया उत्पादों और संख्यात्मक, ग्राफिकल या समय-आधारित हो। एक व्यावसायिक रूप से उपलब्ध शीर्षक के रूप में जिसे विपणन के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया है। इन्हें सीडी-रोम पर, टेप पर, इंटरनेट के माध्यम से, इत्यादि पर डिलीवर किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में, कई तकनीकों और संबंधित मानकों को विकसित किया गया है जो दस्तावेजों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में बनाने और वितरित करने की अनुमति देते हैं। इसलिए वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए, पुस्तकालय अपने संग्रह विकास के लिए नए मीडिया, अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की ओर रुख कर रहे हैं ताकि उपयोगकर्ताओं की मांगों को बेहतर ढंग से पूरा किया जा सके। चुंबकीय और ऑप्टिकल मीडिया पर ई-संसाधनों का विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के संग्रह पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। हेरफेर और खोज के लिए अंतर्निहित क्षमताओं के कारण ये अधिक उपयोगी हैं, सूचना तक पहुंच प्रदान करना सूचना संसाधनों को प्राप्त करने के लिए सस्ता है, भंडारण और रखरखाव में बचत, आदि और कभी-कभी इलेक्ट्रॉनिक रूप ही एकमात्र विकल्प है।

उपयोगकर्ताओं से इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग करने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार के संसाधन के उपयोग के स्तर को निर्धारित करने के लिए अध्ययन किए गए, उपयोगकर्ता इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के आसपास के विभिन्न मुद्दों के बारे में कैसा महसूस करते हैं, और क्या विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के उपयोग के स्तर को निर्धारित करने के लिए अध्ययन किए गए विषय पर निर्भर दृष्टिकोण बदलते हैं, जिस तरीके से वे महसूस

www.ignited.in

किया कि इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों ने उनके अकादमिक करियर में बाधा डाली या सुधार किया यदि वे खुद को संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम मानते हैं, तो क्या इन संसाधनों के उपयोग के बिना उनके काम का मानक प्रभावित होगा और स्रोतों का उपयोग करने के लिए आवश्यक कौशल हासिल करने के लिए नियोजित विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल होगा।

इन तकनीकी विकासों के संयोजन के साथ, कई स्टैंड-अलोन सीडी-रोम, जो पिछले एक दशक से परिचालन में हैं, को तेजी से नेटवर्क किया जा रहा है, जो संस्थान में किसी भी नेटवर्क कंप्यूटर टर्मिनल से न केवल पुस्तकालय के भीतर पहुंच प्रदान करता है, इसलिए उपयोगकर्ता में सुधार करता है अभिगम्यता।

इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोत आज के उपयोगकर्ता को अपने पूर्ववर्तियों से भिन्न अवसर प्रदान करते हैं। उपयोगकर्ता के लिए ई-संसाधनों के लाभ, आवश्यक जानकारी उपयोगकर्ता को सबसे उपयुक्त स्रोत से वितरित की जा सकती है; उपयोगकर्ता गतिशील रूप से अपनी आवश्यकताओं को फिर से निर्दिष्ट कर सकता है; जानकारी तब प्राप्त की जाती है जब इसकी आवश्यकता होती है, इसलिए "जस्ट इन केस" के बजाय "जस्ट इन टाइम" बन जाता है; उपयोगकर्ता केवल विशिष्ट प्रश्न का उत्तर देने के लिए आवश्यक जानकारी का चयन करता है और अंत में, जानकारी केवल संग्रहीत की जाती है, उपयोगकर्ता की इच्छा होनी चाहिए। इसलिए इलेक्ट्रॉनिक जानकारी पारंपरिक प्रिंट-आधारित स्रोतों पर कई लाभ प्रदान कर सकती है।

इन लाभों में यह तथ्य शामिल है कि इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोत अक्सर प्रिंट इंडेक्स से परामर्श करने की तुलना में तेज़ होते हैं, खासकर जब पूर्वव्यापी खोज करते हैं, और जब वे कीवर्ड के संयोजन का उपयोग करना चाहते हैं तो वे अधिक सीधे होते हैं। वे एक समय में कई फाइलों को खोजने की संभावना को खोलते हैं, एक उपलब्धि को अधिक आसानी से पूरा किया जाता है

साहित्य की समीक्षा

सुनील मंसूर (2012) मौजूदा या संभावित पीढ़ियों के उपयोग के लिए जागरूकता भंडार, पंजीकृत रिकॉर्ड के रूप में संरक्षित उम्र की बुद्धि के अभिलेखागार का गठन करते हैं। डिजिटल मीडिया ने संचित बुद्धि के उपयोग को आसान, तेज और अधिक सुविधाजनक बना दिया है। वर्षों से एकत्रित इस ज्ञान का उपयोग अध्ययन जारी रखने, सामान्य रूप से जनसंख्या में सुधार और वृद्धि करने के लिए किया जाना चाहिए। यह लेख इंजीनियरिंग कॉलेजों के पुस्तकालयों में डिजिटल दुनिया में संग्रह के निर्माण के कई पहलुओं को संबोधित करता है। ज्ञान संग्रह, पुनर्प्राप्ति और भंडारण में तकनीकी प्रगति के कारण उत्पन्न हुए कई समायोजनों को संबोधित किया गया है।

राधाकृष्णन नटराजन, शांति एल (2012) थीसिस ने अन्ना यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, कोयंबटूर में अनुसंधान वैज्ञानिकों और इसके संबंधित विश्वविद्यालयों के इलेक्ट्रॉनिक पूंजी के ज्ञान का विश्लेषण किया। शोधार्थी ने सुलभ सेवाओं की समझ का विश्लेषण किया कि पुस्तकालय ने किस प्रकार के संसाधनों की पेशकश की है। परिणाम बताते हैं कि अधिकांश प्रतिभागी इस बात से प्रसन्न हैं कि उनके विश्वविद्यालयों में ई-संसाधन सुलभ हैं। किसी भी शोधकर्ता ने सोचा कि उन्हें उनका उपयोग करने के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

चंद्रन वेलमुरुगन (2013) चेन्नई दृष्टिकोण/डिजाइन/पद्धति के एसकेआर इंजीनियरिंग कॉलेज (एसकेआरईसी) के संकाय सदस्यों द्वारा पुस्तकालय इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं को समझने और प्रासंगिक मुद्दों का उपयोग करने के लिए अनुसंधान और पता लगाने के लिए - इस विश्लेषण में एक वर्णनात्मक प्रणाली का उपयोग किया गया है। कुल 150 प्रश्नावली परिचालित की गई थी, लेकिन 105 का पूरा सर्वेक्षण लौटा दिया गया था। चयनित अध्ययन समुदाय से आँकड़ों के संग्रह के लिए एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली का विकास किया गया। दायरा और सीमाएं - इस शोध में केवल चेन्नई के एसकेआर इंजीनियरिंग कॉलेज के सभी डिवीजनों के प्रोफेसरियल प्रतिनिधि शामिल हैं। निष्कर्ष - साक्षात्कार में शामिल लोगों में से 48.57% व्याख्याता हैं, 23.81% वरिष्ठ व्याख्याता हैं, 20.0% सहायक हैं। प्रोफेसर हैं और सिर्फ 7.62% प्रोफेसर हैं। प्रोफेसर, क्रमशः। 62.8% उत्तरदाताओं को इंटरनेट सेवाओं के बारे में पता है, लेकिन उनमें से केवल 37.2% नहीं जानते हैं।

अपूर्वज्योति मजूमदार, शर्मिला बोस मजूमदार (2014) इसका मुख्य लक्ष्य इंजीनियरिंग कॉलेज में असम के पुस्तकालयों द्वारा वेब-आधारित उपकरणों के उपयोग का विश्लेषण और मूल्यांकन है। इसमें शिक्षकों, छात्रों और शिक्षाविदों सहित विद्यार्थियों की विभिन्न श्रेणियां शामिल हैं। इसका उद्देश्य ई-संसाधनों के उपयोग के विभिन्न कारकों को ध्यान में रखना है: उद्देश्य, प्रभाव, महत्व, चिंताएं, स्वीकृति और ई-संसाधन संतुष्टि। सर्वेक्षण करने

www.ignited.in

के लिए और फिर जहाँ उपयुक्त हो वहाँ साक्षात्कार करने के लिए एक मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया था। दो प्रश्नावली प्रारूप बनाए गए हैं: पहला, मुद्रित प्रारूप और दूसरा, गूगलडॉक्स इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप। एमएस एक्सेल द्वारा प्राप्त डेटा को संसाधित और व्याख्यायित किया गया है। शोध असम इंजीनियरिंग विद्वानों द्वारा ई-संसाधनों के उपयोग के कई पहलुओं की पहचान करता है। यह दर्शाता है कि इंजीनियरिंग पुस्तकालयों के उपभोक्ता कई प्रकार के ई-संसाधनों का उपयोग करते हैं।

मुरुगन के. (2015) यह लेख तमिलनाडु के वल्लूर क्षेत्र में यूनिवर्सल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग और छात्रों के प्रौद्योगिकी संकाय के ई-संसाधन उपयोगकर्ताओं को प्रस्तुत करता है। सर्वेक्षण विधि प्रश्नावली उपकरण का उपयोग करके विश्लेषण के लिए डेटा प्राप्त किया गया था। 80 उत्तरदाताओं में से 62.5% छात्र और 37.50% शिक्षक ई-संसाधनों का मूल्यांकन कर रहे थे। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि 14 (54,00 प्रतिशत) ई-पत्रिकाओं के उत्तरदाता संकाय का उपयोग करते हैं, और 16 (50,00 प्रतिशत) छात्र उपयोग के लिए ई-संसाधनों का उपयोग करते हैं।

एट्संगो, मार्गरेट अरोन्या (2015) इलेक्ट्रॉनिक किताबें एक वैश्विक आम बात होती जा रही हैं, लेकिन कुछ उपभोक्ताओं की अपरिचितता के कारण, वे आवश्यक नहीं हैं जैसा कि आमतौर पर अन्य ई-संसाधनों के रूप में उपयोग किया जाता है। अकादमिक पुस्तकालय महत्वपूर्ण अनुसंधान केंद्र हैं, जो विज्ञान के सभी क्षेत्रों के प्रयासों को सुविधाजनक बनाते हैं और एक ऐसे ढांचे को बनाने और प्रोत्साहित करने का लक्ष्य रखते हैं जिससे अनुसंधान उत्पादन की मांग हो। पुस्तकालय परंपरागत रूप से सबसे मजबूत संगठन है जो कुशल उपयोग और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए प्रिंट सामग्री उपकरण इकट्ठा, व्यवस्थित और बनाए रखता है। हालांकि, ई-सूचना और ईबुक सेवाओं के विकास ने विकसित देशों में पुस्तकालयाध्यक्षों को सूचना एकत्र करने और सूचना की सामर्थ्य और सुविधा का मूल्यांकन करने के लिए रणनीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

मणि भूषण रॉय, डॉ नरेश कुमार (2017) पेपर इलेक्ट्रॉनिक पूंजी के विविध पहलुओं को दर्शाता है। डिजिटल मीडिया ने संचित बुद्धि के अनुप्रयोग को तेज, तेज और अधिक सुविधाजनक बना दिया है। आगे के शोध के लिए; सुधार और समुदाय की सामान्य उन्नति, वर्षों से एकत्रित इस ज्ञान का उपयोग किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं तक शीघ्रता से पहुँचा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक संसाधन कंप्यूटिंग के मुद्दों को संबोधित करते हैं और ज्ञान प्रवाह की निगरानी करते हैं। प्रिंट स्रोतों का डिजिटलीकरण। अकादमिक दुनिया के लिए, ज्ञान के इलेक्ट्रॉनिक रूप तेजी से प्रासंगिक होते जा रहे हैं। प्रौद्योगिकी की शुरुआत के साथ, पुस्तकालयों ने अपने कैटलॉग में नई वस्तुओं को पेश किया है। ई-संसाधन उनमें से सबसे प्रभावशाली हैं। यह पत्र एक रूपरेखा प्रदान करता है, लाभ और कमियों की व्याख्या करता है, और वेबसाइटों की एक छोटी संख्या के लिए पते प्रदान करता है।

डेयर सैमुअल एडेलके, केनेथ इवो नोगोज़ी नवालो (2017) इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं के प्रावधान, ज्ञान और उपयोग के माध्यम से आधिकारिक, सुरक्षित, सही और समय पर जानकारी तक पहुंच प्रदान की जाती है। इलेक्ट्रॉनिक ज्ञान उपकरण (ईआईआर) का उपयोग शिक्षण में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करेगा और एक डिजिटल युग में अनुसंधान को धीरे-धीरे प्रोत्साहित करके स्नातकोत्तर अध्ययन की गति को बढ़ाएगा। अनुसंधान ने एक वर्णनात्मक अध्ययन किया। 13 संकायों में से सात में 300 पोस्टडॉक्टरल छात्रों के नमूने बेतरतीब ढंग से चुने गए हैं। पूछताछ प्रश्नावली का उपयोग करके डेटा प्राप्त किया गया था और वर्णनात्मक आंकड़ों के प्रतिशत, माध्य और मानक विचलन का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि इंटरनेट को विश्वविद्यालय के सबसे सुलभ और उपयोग के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

एस अरविंद (2017) इस थीसिस का उद्देश्य जिला डिंडीगुल में इंजीनियरिंग स्कूलों के छात्रों को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उपयोग का अध्ययन करना है। प्राथमिक ज्ञान इंजीनियरिंग स्कूलों में सर्वेक्षकों द्वारा प्राप्त किया जाता है। 5 चयनित डिंडीगुल जिला इंजीनियरिंग स्कूलों से इंजीनियरिंग छात्रों का चयन किया गया था। कुल 250 प्रश्नपत्र वितरित किए गए हैं। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं की शिकायत है कि इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं का उपयोग करते समय गोपनीयता की समस्या सबसे बड़ी चुनौती है।

डॉ. एबेनेज़र अंकरा, डायना एटुआसे (2018) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के क्षेत्र में, विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में संचालन के किसी भी क्षेत्र को मौलिक रूप से संबोधित किया गया है। उपभोक्ताओं की निरंतर परिष्कृत ज्ञान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तकनीकी परिवर्तन के साथ तालमेल रखने के लिए

अकादमिक पुस्तकालयों की एक अनिवार्य जिम्मेदारी है। यह थीसिस ज्यादातर केप कोस्ट यूनिवर्सिटी के छात्रों पर केंद्रित थी, जो खोज के आधार पर सुझाव देने के लिए तकनीकी उपकरणों के उपयोग का अध्ययन कर रहे थे।

सी. विनोथ कुमार, डॉ. एम. पलानीअप्पन (2018) अध्ययन बायोसाइंस कॉलेजों के छात्रों द्वारा ई-संसाधनों के उपयोग, ज्ञान और ई-संसाधन के उपयोग पर केंद्रित है, और ई-संसाधनों तक पहुंच से उत्पन्न समस्याओं को रेखांकित करता है। पेरियार यूनिवर्सिटी के बायोसाइंस रिसर्च स्कॉलर्स ने कुल 130 प्रश्नावलियों को परिचालित किया। रिपोर्ट के लिए चुने गए कुल 120 (88.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं में से 38 जैव प्रौद्योगिकी उत्तरदाताओं, 36 माइक्रोबायोलॉजी उत्तरदाताओं, 32 प्रतिवादी अनुसंधान विद्वानों और जैव रसायन विद्वानों को एकत्रित किया गया।

सुबूही सिद्दीकी (2018) जब उपभोक्ताओं को ई-संसाधनों तक पहुंचना और उनका उपयोग करना आसान लगता है, तो अकादमी में शिक्षाविदों ने ई-संसाधनों पर अपनी निर्भरता का विस्तार किया है। यह निबंध संकाय सदस्यों और छात्रों द्वारा अर्थशास्त्र के क्षेत्र में ई-संसाधनों के उपयोग की जांच करता है। विश्लेषण में अर्थशास्त्र विभाग, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से समुदाय का चयन शामिल था, जिसमें संकाय सदस्य, अकादमिक विद्वान और स्नातकोत्तर छात्र (डीई, डीएसई) शामिल थे। 120 प्रश्नावली उपभोक्ताओं तक पहुंचाई गईं, जिनमें से 110 ने इनपुट (91.66%) भेजा था।

कार्यप्रणाली

अध्ययन की आबादी में मध्य प्रदेश में हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाविद, शोध विद्वान और संकाय सदस्य शामिल थे। सर्वेक्षण को सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में जागरूकता और उपयोग का सटीक वर्णन करने की सबसे अधिक संभावना के रूप में चुना जाएगा- चयनित विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश में शिक्षाविदों, शोध विद्वानों और संकाय सदस्यों वाले व्यक्तियों का एक उपयोगकर्ता सर्वेक्षण। इस अध्ययन में सभी 700 प्रश्नावलियों को विभिन्न विषयों के शिक्षाविदों, शोधार्थियों और संकाय सदस्यों के बीच वितरित किया गया। वितरित किए गए 700 प्रश्नावली में से 625 को पुनः प्राप्त किया जाएगा, जिससे प्रतिक्रिया दर 86.80% हो जाएगी। पच्चीस प्रश्नावली पर विचार नहीं किया गया क्योंकि उनमें पूर्ण उत्तर नहीं होंगे। वर्तमान अध्ययन के लिए सभी 600 प्रश्नावली का विश्लेषण किया गया था। सर्वेक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव की पहचान करने और इस व्यवहार को कई चरों से जोड़ने के लिए उत्तरदाताओं के उपयोगकर्ता व्यवहार का वर्णन करने के लिए डेटा एकत्र किया गया था। सर्वेक्षण प्रपत्र में उत्तरदाताओं की विशेषताओं के बारे में प्रश्न शामिल थे जो उनके सूचना-प्राप्त व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।

डेटा विश्लेषण

तालिका-1: श्रेणी के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

क्रमांक	श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
1.	संकाय	150	25.00	25.00
2.	अनुसंधान विद्वान	450	75.00	100.00
कुल		600	100.00	-

प्राप्त परिणाम के अनुसार उत्तरदाताओं में से 25 प्रतिशत शिक्षक हैं और उनमें से 75 प्रतिशत शोधार्थी हैं

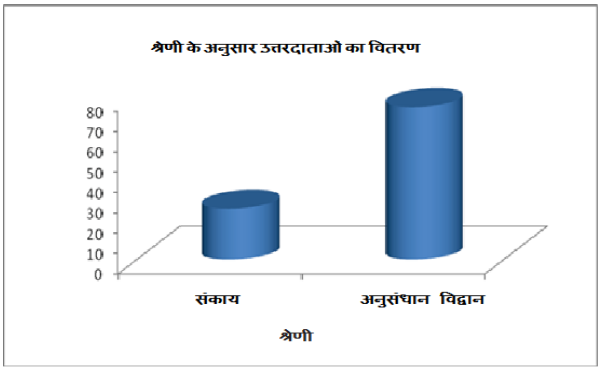

तालिका-2: संस्थाओं के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

संस्थान का प्रकार	नाम	उत्तरदाताओं की संख्या
डीम्ड विश्वविद्यालय	एयूएमपी	57(19.0)
	मध्य प्रदेश चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय	57(19.0)
	लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान शक्ति नगर,	46(15.3)
	भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थान	45(15.0)
	पंडित द्वारका प्रसाद मिश्रा भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान	47(15.6)
	जेपी यूनिवर्सिटी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी	48(16.0)
राज्य विश्वविद्यालय	अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय	107 (35.6)
	महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय	96 (32.0)
	जीवाजी विश्वविद्यालय	97 (32.3)

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि डीम्ड विश्वविद्यालयों में से 19 प्रतिशत एयूएमपी और लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान शक्ति नगर, 15.3 प्रतिशत भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थान, उनमें से 15 प्रतिशत पंडित द्वारका प्रसाद मिश्रा

www.ignited.in

भारतीय से हैं। सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, उनमें से 15.6 प्रतिशत भारत से और उनमें से 16 प्रतिशत जेपी इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से और राज्य विश्वविद्यालयों में 35.6 प्रतिशत मध्य प्रदेश विश्वविद्यालय से, उनमें से 32 प्रतिशत मध्य प्रदेश महर्षि महेश योगी वैदिक से हैं। विश्वविद्यालय और उनमें से 32.3 प्रतिशत जीवाजी विश्वविद्यालय से।

तालिका -3: उत्तरदाताओं के संस्थान और इंटरनेट के वितरण का कॉलेज के शैक्षणिक अनुभव का सामान्य रूप से सकारात्मक प्रभाव पड़ा है

संस्थान	इंटरनेट के उपयोग का सकारात्मक प्रभाव				कुल
	दृढ़तापूर्वक सहमत	इस बात से सहमत	तटस्थ	असहमत	
डीम्ड विश्वविद्यालय	23 (7.7)	189 (63.0)	54 (18.0)	34 (11.3)	300
राज्य विश्वविद्यालय	42 (14.0)	175 (58.3)	52 (17.3)	31 (10.3)	300
कुल	65 (10.8)	364 (60.7)	106 (17.7)	65 (10.8)	600

तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि डीम्ड विश्वविद्यालयों में 7.7 प्रतिशत दृढ़ता से सहमत हैं, उनमें से 63% सहमत हैं, उनमें से 18% तटस्थ हैं और 11.3% असहमत हैं।यह राज्य के विश्वविद्यालय हैं, उनमें से 14% दृढ़ता से सहमत हैं, उनमें से 58.3% सहमत हैं, उनमें से 17.3% तटस्थ हैं और उनमें से 10.3% असहमत हैं।

तालिका -4: उत्तरदाताओं के संस्थान का वितरण और ई-संसाधन कौशल का उपयोग करना सीखा

ई-संसाधन कौशल सीखने के तरीके	संस्थान		कुल
	डीम्ड यूनिवर्सिटी	राज्य विश्वविद्यालय	
परीक्षण त्रुटि विधि	71(23.7)	69(23.0)	140(46.7)
मार्गदर्शन प्रपत्र मित्र	101(33.7)	80(26.7)	181(60.3)
पुस्तकालय कर्मचारियों से मार्गदर्शन	47(15.7)	37(12.3)	84(28.0)
टीचिंग स्टाफ या कंप्यूटर स्टाफ से मार्गदर्शन	27(9.0)	42(14.0)	69 3.0)
संस्था द्वारा दिया जाने वाला प्रशिक्षण	3(1.0)	6(2.0)	9(1.5)
आत्म अनुदेश	51(17.0)	66(22.0)	117(19.5)

तालिका से स्पष्ट है कि ट्रेन और त्रुटि में, उनमें से 23.7% के पास डीम्ड विश्वविद्यालय हैं और उनमें से 23% के पास राज्य विश्वविद्यालय हैं।यह दोस्तों का मार्गदर्शन है, उनमें से 33.7% के पास डीम्ड विश्वविद्यालय हैं और उनमें से 26.7% के पास राज्य विश्वविद्यालय हैं।यह पुस्तकालय कर्मचारियों से मार्गदर्शन करता है, उनमें से 15.7% डीम्ड विश्वविद्यालय हैं और उनमें से 12.3% राज्य विश्वविद्यालय हैं।यह शिक्षण स्टाफ या कंप्यूटर कर्मचारियों से मार्गदर्शन करता है, उनमें से 9% डीम्ड विश्वविद्यालय हैं और उनमें से 14% राज्य विश्वविद्यालय हैं।संस्थान द्वारा यह प्रशिक्षण दिया जाता है, उनमें से 1% डीम्ड विश्वविद्यालय हैं और उनमें से 2% राज्य विश्वविद्यालय हैं।यह स्व-शिक्षा है, उनमें से 17% के पास डीम्ड विश्वविद्यालय हैं, और उनमें से 22% के पास राज्य विश्वविद्यालय हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन का उद्देश्य मध्य प्रदेश में हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय में ऑनलाइन और ई-संसाधन शिक्षाविदों, शोध विद्वानों और संकाय सदस्यों की जागरूकता और उपयोग का पता लगाना है। उसके लिए शोधकर्ता ने उस चयनित संस्थान से 600 नमूनों का चयन किया। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाविदों, शोध विद्वानों और संकाय सदस्यों ने ई-संसाधनों का उपयोग किया। परिणाम से पता चलता है कि संस्था समूह अपनी संस्था के आधार पर पुस्तकालयों में ई-संसाधनों के बारे में अपनी राय में काफी भिन्न हैं। विश्लेषण से साबित होता है कि पदनाम के आधार पर उनके पुस्तकालय में ई-संसाधनों के प्रभाव के बारे में उत्तरदाताओं की राय में महत्वपूर्ण अंतर है। अपने पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव के बारे में उत्तरदाताओं की राय में मतभेद हैं।

संदर्भ

1. सुनील मंसूर (2012) पर "इंजीनियरिंग कॉलेज पुस्तकालयों में ई-संसाधन संग्रह विकास: ज्ञान केंद्र प्रबंधकों के लिए एक चुनौती", डिजिटल लाइब्रेरी सर्विसेज के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड I, 2, अंक -1।

2. राधाकृष्णन नटराजन, शांति एल (2012) पर "अन्ना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोयंबटूर और इसके संबद्ध कॉलेजों के अनुसंधान विद्वानों के बीच इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की जागरूकता", पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के भारतीय जर्नल, खंड 6

3. चंद्रन वेलमुरुगन (2013) पर "एक इंजीनियरिंग कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु, भारत-एक केस स्टडी के विशेष संदर्भ के साथ संकाय सदस्यों द्वारा ई-संसाधनों की जागरूकता और उपयोग", पुस्तकालय विज्ञान में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 4, अंक 3

4. अपूर्वज्योति मजूमदार, शर्मिला बोस मजूमदार (2014) "असम के इंजीनियरिंग कॉलेज पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की पहुंच: एक अनुभवजन्य विश्लेषण", इंजीनियरिंग में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की पहुंच, 9वां कन्वेंशन प्लानर

5. मुरुगन के. (2015) "यूनिवर्सल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, वल्लियूर, तमिलनाडु के संकाय और छात्रों द्वारा ई-संसाधनों का उपयोग: एक अध्ययन", पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में अग्रिमों के जर्नल, वॉल्यूम 4, नहीं 1, पीपी-73-76

6. अत्संगो, मार्गरेट अरोन्या (2015) "शैक्षणिक पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों का उपयोग: विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय का एक केस स्टडी", पुस्तकालय विज्ञान विभाग।

7. मणि भूषण रॉय, डॉ नरेश कुमार (2017) "शैक्षणिक पुस्तकालय में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग", सूचना आंदोलन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 2 अंक VI पर

8. डेयर सैमुअल एडेलके, केनेथ इवो न्गोज़ी नवालो (2017) "इबादान विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के उपयोग की उपलब्धता, उपयोग और बाधाएं", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉलेज कंटेंट डेवलपमेंट एंड टेक्नोलॉजी वॉल्यूम 7, संख्या। 4, 51-69

9. एस अरविंद (2017) "इंजीनियरिंग कॉलेज पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग: उपयोगकर्ता अध्ययन", पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में अग्रिम जर्नल, आईएसएसएन: 2277-2219 वॉल्यूम। 6 नंबर 1, पीपी 85-89

10. डॉ. एबेनेज़र अंकरा, डायना एट्यूसे (2018) पर "केप सीओएएस विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग", पुस्तकालय दर्शन और अभ्यास (ई-जर्नल)। 1632.

11. सी. विनोथ कुमार, डॉ. एम. पलानीअप्पन (2018) पर "पेरियार विश्वविद्यालय, सेलम में बायोसाइंसेज स्कूल के विद्वानों के बीच ई-संसाधनों का उपयोग", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्योर एंड एप्लाइड मैथमेटिक्स, वॉल्यूम 119 नंबर 12, 16639 -16654

12. सुबूही सिद्दीकी (2018) "दिल्ली विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र में संकाय सदस्यों और छात्रों द्वारा ई-संसाधनों का उपयोग: एक अध्ययन", एसआरईएलएस जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट, वॉल्यूम 55(6), पी। 343-353

13. दीपक कुमार कुंडू (2018) पर "पश्चिम बंगाल के इंजीनियरिंग कॉलेजों में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का प्रभाव: एक केस स्टडी", मानविकी, कला और साहित्य में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, आईएसएसएन (पी): 23474564

Corresponding Author

Reetu Tiwari*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

www.ignited.in